तुलसी प्रज्ञा

ISSN 0974-8857

TULSI PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati University

VOL.-151 APRIL - JUNE, 2011

Patron

Samani Charitraprajna

Vice-Chancellor

Editor

Hindi Section

Dr Mumukshu Shanta Jain

English Section

Prof. Jagat Ram Bhattacharyya

Managing Editor

Nepal Chand Gang

Editorial-Board

Prof. Mahavir Raj Gelra, Jaipur

Prof. Satya Ranjan Banerjee, Kolkata

Prof. Arun Kumar Mookerjee, Kolkata

Prof. Dayanand Bhargava, Jaipur

Prof. Frank Van Den Bossche, Belgium

Prof. Bachh Raj Dugar, Ladnun

Prof. J.P.N. Mishra, Ladnun

Publisher :

Jain Vishva Bharati University

Ladnun-341306, Rajasthan, India

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati University

VOL.-151 APRIL-JUNE, 2011

Editor Hindi
Dr Mumukshu Shanta Jain

Editor English
Professor Jagat Ram Bhattacharyya

Managing Editor
Nepal Chand Gang

Editorial Office
Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati University
LADNUN-341 306, Rajasthan, India

Publisher : Jain Vishva Bharati University
Ladnun-341 306, Rajasthan, India

Type Setting : Jain Vishva Bharati University
Ladnun-341 306, Rajasthan, India

Printed at : Jaipur Printers Pvt. Ltd.
Jaipur-302 015, Rajasthan, India

Subscription (Individuals) Three Year 500/-, Life Membership Rs. 2100/-

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers. The Editors may not agree with them.

अनुक्रमणिका / CONTENTS

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृ. संख्या
तत्त्वार्थवार्तिक में प्रतिपादित केवलज्ञान और सर्वज्ञता	डॉ. अशोककुमार जैन	05
आचार्य महाप्रज्ञ का आर्थिक चिंतन	समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा	15
आचार्य महाप्रज्ञ की अर्थशास्त्रीय अवधारणा	प्रस्तोता : मुनि अक्षय कुमार	23
भारतीय दर्शनों मे इन्द्रिय प्रत्यक्ष	साध्वी श्रुतयशा	27
आचार्य तुलसी प्रथम संस्थापक अनुशास्ता : जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय के	प्रोफेसर दयानन्द भार्गव	41
आदि पुराण में भगवान ऋषभ का चरित्र	डॉ. शांता जैन	47

ENGLISH SECTION

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	60
Anekānta: A Tool For Peace	Dr Pratibha J. Mishra	69
Some Refelection on the Samaṇasuttam	Dr Sagarmal Jain	77

प्रकाश और स्वास्थ्य

जो धन का संग्रह करते हैं, उसका त्याग नहीं करते, वे प्रकाश की उपेक्षा कर धुएँ को अपने भीतर संचित कर रहे हैं।

जो सत्ता का संग्रह करते हैं, उसका त्याग नहीं करते, वे स्वास्थ्य की उपेक्षा कर दूषित वायु को अपने भीतर संचित कर रहे हैं।

जीवन का सूत्र है-ग्रहण करो, काम में लो और त्याग दो।

जो इस सूत्र से परिचित हैं, उनके जीवन में प्रकाश है, सुख और स्वास्थ्य है।

जो केवल लेना जानते हैं, देना नहीं जानते, भोग करना जानते हैं, किन्तु त्याग करना नहीं जानते, उन्हें न प्रकाश प्राप्त है और न स्वास्थ्य।

भोग से शौर्य का दीप बुझता है और त्याग से वह प्रज्वलित होता है। भोग से जीवन का फूल मुरझा जाता है और त्याग से खिलता है।

- अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ